विश्व-प्रेम के प्रचारक—

ठाकुर दयानन्द

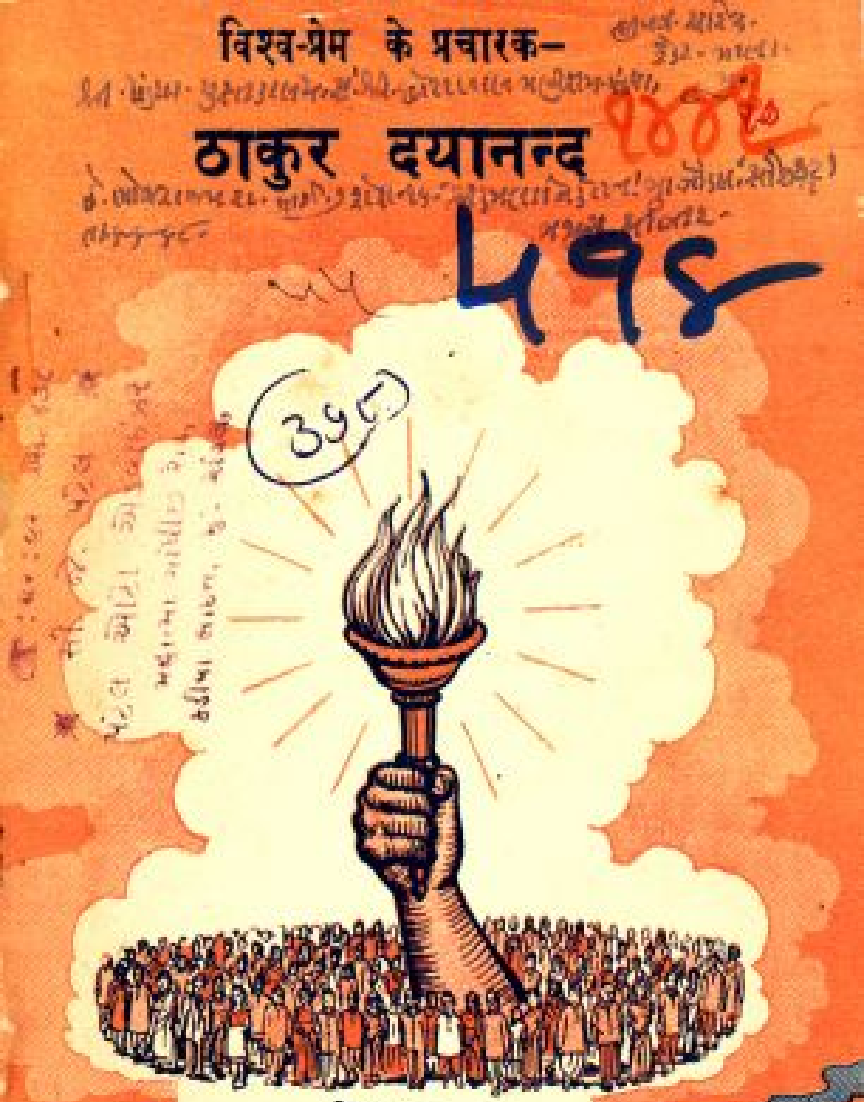

लेखक :—

श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्व-प्रेम के प्रचारक—ठाकुर दयानन्द

भारत अध्यात्म-प्रधान देश है। इसके मनीषियों ने आरम्भ से ही स्थूल शरीर को प्रधानता न देकर आत्मा को ही प्रधानता दी है। उनका विश्वास था कि यह समस्त विश्व एक ही महातत्त्व से विकसित हुआ है और प्राणीमात्र में एक ही आत्मतत्त्व और प्राणशक्ति व्याप्त है। इसलिये वे परस्पर में भिन्नता का अनुभव न करके ऐक्य की भावना ही करते थे और उसी समय उनके मुख से 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे महावाक्य प्रकट हुए थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पर संसार के अधिकांश व्यक्तियों ने व्यवहार में इस आत्मतत्त्व को एक कल्पना से अधिक महत्त्व न दिया और भौतिक लाभ के लिये अध्यात्म का ध्यान सर्वथा भुला दिया। सिकन्दर, सीजर, हलाकू, चंगेज और नेपोलियन जैसे रक्त बहाने वालों को इतिहासकारों ने उच्च पद प्रदान किया। अन्य जातियों पर आक्रमण करके उनको पराधीन बनाने वालों को चक्रवर्ती और शहंशाह की पदवियाँ दी गईं। दूसरे देशों को लूट-पाट कर अपने राज्य की सम्पदा बढ़ाने वाले देशभक्त कहलाये। संसार के प्रायः सभी देश प्राचीन काल से इसी नीति पर चलते आये हैं। भारतवर्ष के शासकों ने आध्यात्मिक शिक्षा के प्रभाव से अन्य देशों पर तो आक्रमण नहीं किया, पर राज्य के लोभ से परस्पर में ये भी खून-खच्चर करते रहे। विदेशियों का मुकाबला करने के लिये भी इनको युद्ध-कला का विकास करना पड़ा और क्षत्रियों तथा राजपूतों आदि का एक वर्ग ही ऐसा बन गया जिसका कर्तव्य युद्ध करना बतला दिया गया। इस प्रकार से संसार के सभी देशों में अब तक प्रायः अशान्ति और संघर्ष का दौरदौरा ही रहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



परन्तु अब मानव जाति के इतिहास में एक ऐसा अवसर आ रहा है जब कि इस मार-काट और लड़ाई-झगड़े के जमाने के बजाय भ्रातृभाव और विश्वशान्ति का युग आने की सम्भावना दिखलाई पड़ने लगी है। सार्वजनिक शिक्षा और वैज्ञानिक उन्नति के परिणामस्वरूप लोगों के मानसिक क्षितिज और भावनाओं में परिवर्तन होने लग गया है और वे समझने लगे हैं कि इस प्रकार लडते-झगड़ते रहना मनुष्य को शोभा नहीं देता। जंगली और पालतू जानवर भी आपस में इतना अधिक नहीं लड़ते जैसा कि मनुष्यों में देखने में आता है। इसलिये योरोपीय देशों के कितने ही विचारक भी कई सौ वर्ष से विश्वशान्ति और विश्व-ऐक्य का प्रचार और समर्थन करने लगे हैं। विशेषत: प्रथम योरोपीय महासमर (सन् १९१४—१८) की भीषणता और वैज्ञानिक अस्त्रों की बढ़ती हुई संहारात्मक शक्ति को देखकर लोगों में यह धारणा बद्धमूल हो गई है कि यदि संसार के राष्ट्र विश्व-शान्ति के कार्यक्रम पर अमल नहीं करेंगे तो मानव-जाति का अस्तित्व थोड़े ही समय तक रह सकता है। फिर जब से अणु-अस्त्रों का प्रयोग आरम्भ हुआ है तब से तो यह सम्भावना सौगुनी अधिक बढ़ चुकी है।

'अरुणाचल-मिशन' की स्थापना—

हमारे देश के विचारक भी पिछले कितने ही वर्षों से इस खतरे को अनुभव करने लगे हैं और यहाँ के कुछ प्रसिद्ध नेता विश्व-शान्ति परिषदों (वर्ल्ड पीस कान्फ्रेंस) में भाग लेते रहते हैं। पर यहाँ इस विचारधारा के सबसे पहले प्रचार करने का श्रेय बङ्गाल के ठाकुर दयानन्द (सन् १८८१—१९३३) को है। उनका जन्म एक सामान्य श्रेणी के परिवार में हुआ था और बाल्यावस्था से ही इनका झुकाव संकीर्तन और कथा-वार्ता की तरफ था। इसलिये इन्होंने स्कूल की शिक्षा भी कम ही पाई और मैट्रिक से ही पढ़ना छोड़ दिया। उसके पश्चात् कुछ समय तक सरकारी नौकरी भी की पर संकीर्तन प्रेम और आध्यात्मिक विषयों की ओर विशेष रुचि होने से वह भी कुछ ही वर्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



करके छोड़ दी। इनका विशेष ध्यान इसी तरफ रहता था और अपने परिचित जनों को सदैव उसकी प्रेरणा देते रहते थे।

सन् १९०९ में ठाकुर दयानन्द ने सङ्कीर्तन का स्थायी रूप से प्रचार करने के लिये सिलचर (आसाम) में नगर से तीन मील के फासले पर एक पहाड़ी टीले पर 'अरुणाचल आश्रम' की स्थापना की। इसमें माँ आनन्दमयी (काली) और अरुणाचलेश्वर (शङ्कर) की मूर्तियाँ स्थापित की गईं। इस संस्था का उद्देश्य संकीर्तन के माध्यम से जनता में आध्यात्मिक भावनाओं का प्रचार करना था। वे ब्राह्मण और अछूत, स्त्री और पुरुष तथा छोटे-बड़े का भेद मानने के विरुद्ध थे और उन्होंने अपने आश्रम तथा प्रचार कार्य में सबको समान अधिकार दिया। इतना ही नहीं उन्होंने अपने आश्रम की अध्यक्षा भगिनी निवेदिता को बनाया, जो स्वामी विवेकानन्द की एक प्रमुख अंग्रेज शिष्या (जिनका पहला नाम मिस मारगरेट नोबुल था) थीं। उस समय वे भारत में स्त्री-शिक्षा और समाजसेवा का कार्य कर रही थीं और राजनैतिक आन्दोलन में परोक्ष रूप से भाग लेती थीं।

अरुणाचल आश्रम में कितने ही आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवक सम्मिलित हो गये और उनमें से अधिकांश ने संन्यास ग्रहण कर लिया। कुछ स्त्रियाँ भी संन्यासिनी बन कर कीर्तन से तल्लीन हो गईं। आरम्भ में कुछ महीने तो किसी ने इस तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया, पर जब इन लोगों ने गाँव गाँव घूम कर प्रचार तथा सङ्गठन का कार्य आरम्भ किया तो सरकारी अधिकारियों की वक्रदृष्टि इन पर पड़ी। कुछ लोगों ने जो इनके समाज-सुधार, नारी-स्वतंत्रता, अस्पर्शता निवारण आदि के विरोधी थे, इन पर आरोप किया कि ये गुप्त रूप से राजविद्रोही कार्य करते हैं। इससे सरकारी अधिकारियों को भी सन्देह हुआ कि सम्भवतः 'आनन्द मठ' नामक क्रांतिकारी उपन्यास में वर्णित संन्यासी-संगठन के आदर्श पर ही यह आश्रम देश में क्रांति फैलाना चाहता है और संकीर्तन की आड़ में उसी की तैयारी कर रहा है। इसलिये आश्रम के पास एक पुलिस कर्मचारी नियत कर दिया गया जो उसकी कार्यवाहियों पर दृष्टि रखता था और वहाँ आने-जाने वालों के नाम भी लिखता रहता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रचार—

आश्रम के एक सहयोगी 'मैत्री' तथा 'प्रजाशक्ति' नाम के दो सामयिक पत्र प्रकाशित करते थे, जिनके द्वारा जनता में जागरण की भावनायें फैलाई जाती थीं। यद्यपि इनकी लेखन शैली धार्मिक होती थी, पर उसका मुख्य उद्देश्य जनता में समाज-सेवा, देश-सेवा के भावों का प्रचार करना ही होता था। 'मैत्री' के एक लेख में 'अरुणाचल' मिशन के प्रचार कार्य के सम्बन्ध में लिखा गया था—

"एक नवीन शक्ति प्राप्त करके बंगाली संन्यासियों का एक दल कार्य के लिये उद्यत होगा। बहुत से बंगाली युवक साधनारत होकर सिद्धि प्राप्त करेंगे। श्रीकृष्ण की वंशी बज उठी है। इस वंशी के स्वर से बहुत से पागल बन जायेंगे। बंगाली जग रहे हैं, भारत को जगाने के लिये। भारत जागृत होगा समस्त जगत् में धर्म का राज्य—शान्ति का राज्य—प्रेम का राज्य स्थापित करने के लिये। पृथ्वी के शैशवावस्था में जो जड़ शक्ति का युग था वह समाप्त हो गया। उसके पश्चात् जो पशु-शक्ति का युग आया वह भी पूरा हो चुका। इस समय बुद्धि-शक्ति का युग चल रहा है और इसके पश्चात् प्रेम-शक्ति का युग आने वाला है। तब फिर जगत् में श्रीकृष्ण का धर्म-राज्य स्थापित होगा।"

इसी प्रकार 'प्रजाशक्ति' में भी विश्वव्यापी समस्याओं पर ही विचार किया जाता था। उसके एक लेख में सामाजिक भेदभाव का प्रतिकार करते हुए कहा गया था—

"भाइयो ! तुम यह विचार करो कि तुम किसका अपमान कर रहे हो ? इस प्रकार तो तुम स्वयं भगवान् का ही उपहास करते हो। इस समय समस्त जगत् में एक महा-भ्रातृत्व और साम्य-संस्थापन का प्रयास किया जा रहा है वह भगवान् के अतिरिक्त और किसी का नहीं है। क्या तुम उसी की हँसी उड़ा रहे हो ? ऐसा करने से तो तुम देव-द्वेषी, आत्मद्रोही बन जाओगे, तुम अन्धकार के मित्र और प्रकाश के शत्रु कहलाओगे। तुम क्या अब भी सब घरों में अन्धकार ही देखना चाहते हो ? पर भगवान् की ऐसी इच्छा नहीं। नया प्रकाश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



लेकर, नवीन आनन्द लेकर, नवयुग आ रहा है। अब घर-घर में प्रेम का प्रवाह बहेगा। घोर अन्धकार में प्रकाश की लहरें उठने लगेंगी। अब भारतवासी क्षुद्र (हीन) होकर नहीं रहेंगे। गङ्गा के देश में रहने वालों को समस्त जगत् में एक विराट्-उदार सभ्यता का विस्तार करने के लिये चारों तरफ दौड़-धूप करनी पड़ेगी। वे चीन के किसानों का प्रेमपूर्वक आलिंगन करेंगे, उनके उपदेश से जापान के सामुराई अपनी तलवारों को तोड़ का कर हल का फार बना लेंगे। जर्मनी में 'क्रप' (कारखाना) अस्त्र बनाने वाला 'मिलन मंदिर' के रूप में परिणत हो जायगा। फ्रांस 'ला मार्शल' को त्याग कर प्रेम का गान करने लगेगा। भारत-सन्तान जगत् में नवीन गीता का प्रचार करेंगे।''

ठाकुर तथा उनके सहयोगी इस प्रकार देशभक्ति के साथ विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रचार करके जन जागरण का प्रयत्न कर रहे थे और बहुसंख्यक युवक उससे प्रेरणा प्राप्त करके इस कार्य के लिये जीवन दान करके संन्यासी बन रहे थे, यह देख कर सरकार का भय और भी बढ़ गया। उसको 'अरुणाचल मिशन' के सब कार्यों में राज्यद्रोह की गन्ध और कुछ गुप्त अभिसंधि जान पड़ने लगी। आश्रम से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों में से जो कहीं पर सरकारी नौकर थे उनको नौकरी से निकाल देने की धमकी दी गई। पर इन लोगों ने बिना किसी सङ्कोच के आश्रम को छोड़ने के बजाय नौकरी को ही छोड़ने का निश्चय कर लिया। इस घटना से अरुणाचल आश्रम का महत्त्व अनेक लोगों की दृष्टि में बहुत बढ़ गया और वे कहने लगे कि ये लोग धर्म के लिये सब प्रकार की हानि, कष्ट और निन्दा सहन करने को प्रस्तुत हैं तो निस्सन्देह प्रशंसा के पात्र हैं। कुछ लोगों द्वारा यह शिकायत कराई गई कि आश्रम वालों के कीर्तन से रात्रि में निद्रा में व्याघात पड़ता है। इस प्रकार सरकार तरह-तरह के उपायों से आश्रम के प्रचार कार्य को रोकने के लिये कटिबद्ध हो गई।

भक्तजनों पर आश्चर्यजनक प्रभाव—

पर ठाकुर पर इन बातों का कोई प्रभाव न पड़ा और दूर-दूर के नगरों और कस्बों में कीर्तन का प्रचार करने लगे। उनके कीर्तन में कुछ ऐसा आकर्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



था कि सभी स्त्री-पुरुष उसे सुनते ही आकर्षित हो जाते थे। लोगों को आश्चर्य होता था कि एक सामान्य पढ़े-लिखे और कल तक जिलाबोर्ड में क्लर्क की नौकरी करने वाले व्यक्ति में ऐसी शक्ति कैसे आ गई कि बी० ए०, एम० ए० परीक्षोत्तीर्ण युवक उसके पीछे-पीछे फिर रहे हैं और अनेक गण्यमान्य नेता भी उनके आश्रम को देखने आ जाते हैं। बस वे वास्तविकता की खोज करने के बजाय ठाकुर पर 'इन्द्रजाल' और 'हिप्नोटिज्म' का आरोप करने लगे। विशेषतः जब वे देखते थे कि उनके साथ रहने वाले युवा संन्यासियों के स्वभाव में शीघ्र ही बड़ा परिवर्तन हो जाता है और वे साधना-पथ पर इतनी शीघ्रता से बढ़ने लगते हैं कि जिसकी उनसे कभी आशा नहीं थी। इसलिये इनके विरोधी और इनकी उन्नति से ईर्ष्या करने वाले कोई अन्य बहाना न पाकर सर्वत्र यही प्रचार करने लगे कि ये 'मेस्मरेजिम' और 'हिप्नोटिज्म' जैसी विधियों से युवकों के दिमाग को खराब कर देते हैं जिससे वे अपने घर बार और कर्तव्य कर्म को भूल कर इनके पीछे लग जाते हैं। जैसे-जैसे ठाकुर का कार्यक्षेत्र बढ़ता गया वैसे-वैसे इस तरह की अफवाहें भी अधिकाधिक फैलती चली गईं और अन्त में इन्हीं के परिणाम स्वरूप अंग्रेज सरकार को ठाकुर और उनके अनुयायियों पर सशस्त्र आक्रमण करने का बहाना मिल गया।

पर इन विघ्न बाधाओं से ठाकुर का कार्यक्रम घटने के बजाय बढ़ता ही जाता था। उनका कहना था कि विरोधियों के आक्रमण से भयभीत होने या मार्गच्युत् होने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपने साथियों को समझाया कि "जब तक प्रतिक्रिया नहीं होती तब तक हृदय के बल को बढ़ाने का और कोई उपाय नहीं है। हमारे विरुद्ध खूब आन्दोलन होने दो, उससे हमारा कार्य और भी पक्का होगा। हमारा आन्दोलन जितना ही तीव्र होगा, लोग उतना ही उसकी वास्तविकता को जानने का प्रयत्न करेंगे और इससे उनके संस्कार दृढ़ होते जायेंगे। राख से ढका हुई अग्नि की तरह एक दिन सत्य अवश्य प्रकट होगा। इस दृष्टि से विरोधी होना सौ गुना अच्छा है किन्तु उदासीन रहना ठीक नहीं।"

जब सरकार की तरफ से संकीर्तन के प्रचार को रोकने की बार-बार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चेष्टा की गई और कीर्तन स्थल में पुलिस के सिपाही तैनात करके लोगों को भयभीत करने की चेष्टा की गई तो ठाकुर दयानन्द ने ३० जून, १९१२ को निम्नलिखित घोषणा की। इस घोषणा को भारत सरकार के पास भेजने के साथ ही देश के समस्त अखबारों में छपने के लिये भी भेज दिया गया। पर उस समय किसी का साहस ऐसी सरकार के विरुद्ध बातों को छापने का नहीं हुआ। घोषणा इस प्रकार थी—

"गत चार वर्ष से 'अरुणाचल' देशवासियों के सम्मुख उपस्थित है। इस बीच में इसके ऊपर गवर्नमेन्ट की तरफ से अन्यायपूर्वक घोर अत्याचार और उत्पीड़न होते रहे हैं। प्रत्येक समय शासनकर्ताओं ने सम्राट् की प्रतिज्ञा के विरुद्ध कार्य किया है। आश्रम के सेवक-सेविकाओं ने धर्म के विषय में इस प्रकार के अनुचित हस्तक्षेप की सूचनायें तार द्वारा भारत सरकार (वायसराय) को भेजी हैं। पर अब यह अवस्था इतनी असह्य हो गई है कि हमको बड़े दुःख के साथ इस गैर कानूनी शासन को अमान्य करना पड़ रहा है। राजा का प्रधान कर्तव्य प्रजा के धर्म पालन में सहायता करना ही है। पर इस समय राजा अपने इस कर्तव्य से भ्रष्ट हो रहा है और बार-बार सुधार के लिये प्रार्थना करने पर भी ध्यान नहीं दे रहा है। इस परिस्थिति में हम भी अपने को राजा और प्रजा के सम्बन्ध से मुक्त समझते हैं। भारत सदा से धर्म भूमि रहा है। धर्म-मार्ग में राज्य अधिकारियों द्वारा इस प्रकार की बाधाएँ सहन करने की अपेक्षा 'अरुणाचल'ई का जो कुछ भी अन्य परिणाम हो उसे अच्छा समझेगा।"

उस समय तो शक्तिशाली अंग्रेजी सरकार और विरोधी पक्ष वालों ने भी इस घोषणा पत्र को 'छोटे मुँह बड़ी बात' बतलाया और उसे हँसी में उड़ा देने की चेष्टा की। पर कौन जानता था कि यही विचार रूपी सूक्ष्म बीज आगामी वर्षों में बढ़कर विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेगा और भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 'अंग्रेजो! भारत को खाली करो' के महान् आन्दोलन के रूप में प्रकट होगा। पर उस समय तो स्थानीय सरकारी अफसरों ने इस आन्दोलन को कुचलने का दृढ़ निश्चय कर लिया और इसके लिये हर तरह की कानूनी तैयारी करने लगे। ४ जुलाई के दिन उनके द्वारा आश्रम की निगरानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिये नियुक्त पुलिस के सिपाहियों ने निम्नलिखित रिपोर्ट तैयार करके अफसरों के पास भेजी—

"निवेदन है कि हम कल दिन और रात भर दयानन्द स्वामी और बाबू महेन्द्रनाथ (ऋषि युगानन्द) की गतिविधियों को विशेष रूप से देखते रहे। वे इस मौलवी बाजार थाने के जगत्शी ग्राम में कीर्तन कर रहे हैं और उनके साथ बहुत से साधू—स्त्री और पुरुष हैं। कल दिन के ४ बजे से रात के १० तक वहाँ लगभग १५०—२०० व्यक्ति जमा थे। उस समय 'साधुओं' ने भाषण दिया कि हम अंग्रेज सरकार के अधीन नहीं हैं, ठाकुर दयानन्द ही हमारे राजा हैं, आस-पास के सभी लोगों को यहाँ आकर उनकी चरण वन्दना करनी चाहिये, नहीं तो अन्य कोई उपाय नहीं है। उस गाँव के लोग अंग्रेजी फौज के आने की बात सुनकर बहुत डर गये हैं और वहाँ से अपने स्त्री-पुत्र, सम्पत्ति आदि को हटा रहे हैं।"

इस प्रकार परिस्थिति को खूब सङ्गीन बना कर ६ जुलाई को असिस्टेन्ट पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० वोमएट दल-बल के साथ आश्रम में पहुँच गये। इसकी सम्भावना समझ कर ठाकुर ने एक दिन पहले आश्रम स्थित सब लोगों से कह दिया कि "जिस किसी को भय प्रतीत होता हो वह इसी समय चला जाये और जो लोग यहाँ ठहरें वे किसी हालत में सरकारी अधिकारियों का प्रतिकार न करें, वरन् जो कुछ सङ्कट आये उसे भगवान् का मङ्गलमय विधान समझ कर हर्षपूर्वक सहन करें।" इसलिये जब मि० वोमएट घोड़े पर सवार होकर आये तो उनको किसी ने न रोका और वे आश्रम के भीतर पहुँच गये। श्री अभेदानन्द ने उनसे तलाशी का वारन्ट दिखलाने को कहा था तो उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वास्तव में उनके पास कोई वारन्ट था ही नहीं। इस पर अभेदानन्द जी ने अपने त्रिशूल द्वारा उनके घोड़े को आगे बढ़ने से रोका। बस पुलिस वालों ने गोली चलाना आरम्भ कर दिया जिससे कितने ही व्यक्ति घायल हुए। इनमें से ऋषि युगानन्द के घाव सांघातिक थे और दस दिन पश्चात् अस्पताल में उनका देहावसान हो गया। स्वामी अभयानन्द, अमरानन्द, पियूषानन्द, प्रणवानन्द भी भयङ्कर रूप से घायल हो गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर जब इस प्रकार की गोली वर्षा के सामने से भी कीर्तन करने वाले नहीं भागे और पहले की अपेक्षा भी अधिक वेग से "प्राणगौर नित्यानन्द" की ध्वनि करने लगे तो बोमण्ट साहब डरे कि इन लोगों के पास अवश्य भयङ्कर अस्त्र शस्त्र छिपे हुए रखे हैं और ये उनसे अब हमारे ऊपर हमला करेंगे। इस काल्पनिक भय से वे शीघ्र ही गोली चलाते-चलाते वहाँ से भाग गये।

मि० बोमण्ट ने वापस जाकर उच्च अधिकारियों को जोरिपोर्ट दी उससे उनको ऐसा जान पड़ा कि इन 'भयङ्कर' संन्यासी और सन्यासिनियों के दल का मुकाबला करने के लिए बड़ी तैयारी करने की आवश्यकता है! उन्होंने जिले के सदर मुकाम में तार भेजकर सैनिकों की सहायता माँगी। वहां से कई सौ सशस्त्र सिपाही और लाठी वाले भेज दिये गये, जिससे जगत्शी का गाँव एक रण क्षेत्र की तरह जान पड़ने लगा। सरकारी सेना ने आश्रम से एक मील की दूरी पर अपना पड़ाव डाला।

इस तरह सात तारीख को ही आश्रम की नाकेबन्दी करली गई। उसी सन्ध्या को डिप्टी कमिश्नर ने ठाकुर दयानन्द के पास पत्र भेजा कि वे ८ तारीख को आश्रम के दरवाजे पर उनसे मिलें और उस समय कोई झगड़ा पैदा करने का कार्य न करें। आश्रम की तरफ से उत्तर दे दिया गया कि "ऐसे अवसर पर हमारी तरफ से कोई विपरीत आचरण नहीं होगा क्योंकि ऐसा करना तो अतिथि-धर्म के विरुद्ध है।" दूसरे दिन डिप्टी कमिश्नर कुछ सिपाहियों को लेकर आश्रम के समीप आये तो ठाकुर दयानन्द ने पुलिस वालों के जोर-जुल्म की सब बात सुनाई। डिप्टी कमिश्नर से इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया और आज्ञा दी कि आश्रम में जितने व्यक्ति हैं वे सब पाँच-पाँच करके बाहर आवें और आश्रम से २०० गज के फासले पर आकर आत्म-समर्पण कर दें। पर ठाकुर ने कहा कि इस समय सब लोग अखण्ड नामयज्ञ का संकल्प लेकर उसमें तल्लीन हैं इसलिये वे तुरन्त उसे त्यागकर अपने पवित्र-व्रत को भङ्ग नहीं कर सकते। डिप्टी कमिश्नर उनको सैनिकबल प्रयोग की धमकी देकर चले गये और घन्टेभर पश्चात् एक सौ से अधिक सशस्त्र पुलिस और फौजी सिपाही तथा कितने ही लाठी वालों को साथ लेकर आश्रम में पहुँच गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस समय वहाँ पर तुमुल कीर्तन चल रहा था और उसमें उन्मत्त आश्रमवासियों को बाहर की घटनाओं की कुछ खबर न थी। वे पूरी तन्मयता के साथ गगनभेदी स्वर में "प्राणगौर नित्यानन्द" की ध्वनि कर रहे थे।

डिप्टी कमिश्नर ने वहाँ पहुँचते ही सबको गिरफ्तार करने का आदेश दिया। क्रोधित सिपाहियों ने पहले तो सबको सङ्गीनों से खूब मारा और फिर हाथों में हथकड़ी डाल दी। पर किसी ने न तो किसी प्रकार का प्रतिरोध किया न तनिक क्रोध प्रकट किया। सिपाहियों ने ठाकुर दयानन्द के पास पहुँचकर बन्दूक के कुन्दे से माथे, छाती और पेट पर आघात पहुँचाया फिर स्वयम् डिप्टी कमिश्नर ने आकर उनको पदाघात किया। माता मैत्रेयी जी ठाकुर की रक्षा करने के लिये बीच में कूद पड़ीं। सिपाहियों के भयङ्कर आघात से माताजी के गले की हड्डी टूट गई।

आश्रम के कुल ५७ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें से ४५ के लगभग स्त्रियाँ और बालक-बालिका थे। इनको वर्षा के कारण कीचड़ से भरे रास्ते और खेतों में होकर पैदल ही मौलबी-बाजार के थाने में ले गये। जहाँ पुरुष और स्त्रियों को दो कमरों में पृथक्-पृथक् बन्द कर दिया गया। संध्या के समय एक डाक्टर ने आकर घायलों की मरहम पट्टी कर दी और कुछ खाने के लिए भी दिया गया। तीन विशेष घायल महिलाओं को छोड़कर शेष समस्त स्त्रियों और बच्चों को संध्या होने पर छोड़ दिया गया।

पुलिस वालों ने आश्रम में प्रतिष्ठित गौराङ्ग की मूर्ति को तोड़-फोड़कर फेंक दिया था। कुछ समय पश्चात् जब इस सम्बन्ध में सरकार पर आरोप लगाया गया तो चीफ कमिश्नर ने जाँच करके फैसला किया कि "दयानन्द जाति से बहिष्कृत व्यक्ति हैं, इसलिए उनके द्वारा प्रतिष्ठित देव-मूर्ति में किसी प्रकार की पवित्रता का होना सन्देह जनक है। जहाँ पहले से ही कोई पवित्रता नहीं थी, वहाँ पवित्रता होने का प्रश्न ही नहीं उठाया जा सकता।"

आश्रमवासियों को गिरफ्तार कर लेने पर चार दिन तक पुलिस ने आश्रम पर कब्जा किये रखा और उसकी पूरी तरह से तलाशी ली। उन्होंने घरों के फर्श खोद डाले छप्परों की टीन को खोलकर देखा, तालाब में भी जाल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फैंककर जाँच की, पर बम, बन्दूक, पिस्तौल तो दूर की बात, कोई भी गैर-कानूनी चीज वहाँ नहीं मिली। हाँ, वहाँ पर खाने का सामान, वस्त्र, बिस्तर, नगद रुपया, पुस्तकें आदि जो कुछ भी मिला उसे सिपाही लूटकर ले गये।

ठाकुर दयानन्द और उनके बारह साथियों पर सिलहट जेल के भीतर ही मुकदमा चलाया गया। ठाकुर दयानन्द ने निम्नलिखित संक्षिप्त बयान दिया—

"मैं अपने सहज और सरल धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहा हूँ और जानता हूँ कि मैंने कोई अपराध नहीं किया। पिछले दो-तीन वर्षों में हमारे विश्व प्रेम-धर्म के प्रचार-कार्य में जिस तरह बिना कारण ही बाधा डाली जा रही है और अभी जगत्शी आश्रम में मेरे और मेरे सहयोगियों के ऊपर जो अमानुषिक अत्याचार किये गये हैं, उनको देखते हुए इस मुकदमे को भी मैं उसी शृङ्खला की एक कड़ी समझता हूँ। अभी तक मेरी शिकायतों पर कभी न्याय नहीं किया गया है और भविष्य में भी कभी न्याय होगा, इसकी आशा नहीं। इसलिये अदालत के सामने किसी प्रकार का बयान देना निरर्थक समझकर, मैं अपने बचाव के लिये कुछ भी कहना नहीं चाहता।"

जब किसी अभियुक्त ने अपना बचाव ही नहीं किया तो फैसला करने में क्या लगता था। अँग्रेज मजिस्ट्रेट ने ठाकुर दयानन्द और स्वामी अभेदानन्द को डेढ़-डेढ़ वर्ष का कठोर कारावास और शेष को तीन माह से लेकर सालभर तक की सजा दे दी।

सरकारी दमन का मुकाबला—

इस प्रकार जो व्यक्ति परमार्थ भावना से समस्त मानव-जाति में भ्रातृत्व की भावना का प्रचार करने के लिये उद्यत हुआ था, जो अज्ञान अन्धकार में पड़े अपने अन्य भाइयों में आध्यात्मिकता की ज्योति प्रज्ज्वलित करने के लिये प्रयत्नशील था उसका विदेशी सरकार और सङ्कीर्णभावापन्न स्वदेशी लोगों ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



मिलकर नाश करने का प्रयत्न किया, इस प्रकार का उदाहरण कम ही देखने में आता है। पर ठाकुर इस घटना से विचलित नहीं हुए। उन्होंने जेल जाते समय यही कहा—

"जिस मनुष्य में आध्यात्मिक शक्ति का विकास हो चुका है उसकी गति को तो समस्त संसार मिलकर के भी नहीं रोक सकता।"

और हुआ भी ऐसा ही। ठाकुर के साहस से अनुप्राणित होकर भक्तवृन्द ने कीर्तन प्रचार का कार्यक्रम बन्द नहीं होने दिया, वरन् वे चारों तरफ भ्रमण करके प्रत्येक नगर और कस्बे को "प्राणगौर नित्यानन्द" और "अभय वाणी सुना, ओ मा! अभया" की ध्वनि से गुंजारने लगे। देश के प्रभावशाली अङ्गरेजी दैनिक-पत्र 'अमृतबाजार' पत्रिका ने स्वयम् खतरा उठाकर भी 'जगत्शी काण्ड' के सम्बन्ध में इतना तीव्र आन्दोलन उठाया कि अन्त में सरकार को उसकी जाँच करने का आदेश देना पड़ा और 'सुरमा घाटी' के कमिश्नर ने एक महीने तक जाँच करके सरकारी पक्ष को उचित सिद्ध किया। उधर जनसाधारण में ठाकुर दयानन्द और उनके संन्यासी दल के सम्बन्ध में तरह-तरह की अफवाहें फैल गईं। वे कहते थे कि अरुणाचल के संन्यासी अँगरेजी बन्दूकों की गोलियों को निगल जाते थे!

जगत्शी-आश्रम पर आक्रमण के कुछ महीने बाद भारतीय क्रांतिकारी दल का एक अज्ञात युवक मौलवी बाजार के सबडिवीजनल अफसर मि० गार्डनर की हत्या करने पहुँचा। वह उनको बँगले के अहाते में घुसने की कोशिश कर रहा था कि काँटेदार तारों में उलझकर गिर पड़ा और बम के फट जाने से स्वयम् ही मर गया। यद्यपि इस घटना से अरुणाचल आश्रम का कोई संबंध न था और उस युवक की शिनाख्त भी न हो सकी, पर इस बहाने को लेकर फिर आश्रम की तलाशी ली गई और वहाँ के रहने वालों को तंग भी किया गया।

ठाकुर भी जेल में जाकर हताश और निष्क्रिय नहीं हो गये वरन् उत्सा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर्षवर्धक सन्देश भेजकर अपने अनुयायियों को उत्साहित करते रहे। अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा—

"एक व्यक्ति ऋषि हो सकता है, सन्त और अवतार भी हो सकता है, ईश्वर का प्रियपात्र हो सकता है, किन्तु ईश्वरीय नियमों का अपवाद नहीं हो सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जितने भी लोगों ने मानवता की सेवा की उन्हें सब सहना पडा, अपने प्राणों की आहुति देकर ही वे कुछ कर पाये। उद्देश्य की पूर्ति में विलम्ब देखकर आप लोगों को हताश नहीं होना चाहिए। कष्टों की अग्नि में तप कर ही कुन्दन बना जाता है। आप लोगों को विश्व के लिये कुछ करना है ऐसा मैं जानता हूँ। आप लोगों का प्रत्येक कार्य सार्थक है। प्रगति का पथ यदि कंटकाकीर्ण है तो कोई चिन्ता नहीं रास्ते में विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़े तो कोई भय नहीं। उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमें निरन्तर प्रयत्नशील रहना ही है। आप भय, आशंका, निराशा सबका परित्याग कर हमारे साथ बढ़ें। हमारे सामने दूसरी कोई चीज नहीं—हमारा महान् उद्देश्य है और हम हैं।"

गुरुदेव से नवीन प्रेरणा पाकर भक्तगण दलबद्ध होकर विभिन्न स्थानों में कीर्तन करने लगे। जगत्शी-काण्ड के कारण इनका नाम इतना प्रसिद्ध हो गया था कि जन-साधारण इनके प्रति श्रद्धा और भक्ति रखने के साथ डरने भी लगे थे। पर सबसे अधिक भयभीत तो सरकार हो रही थी। वह इनके आगे और पीछे सदैव पुलिस और खुफिया वालों को लगाये रहती थी। पबना शहर में एक सज्जन के घर पर इनका कीर्तन सात दिन, दिन-रात लगाकर चलता रहा। इससे वहाँ का मजिस्ट्रेट घबरा गया और भय हुआ कि यहाँ 'जगत्शी' की पुनरावृत्ति न हो जाय। इसलिये उनने संन्यासियों से प्रस्ताव किया कि वे लोग यहाँ से चले जायें, उसके जाने का खर्च सरकार दे देगी। पर संन्यासी बिना एक विशाल नगर कीर्तन किये जाने को तैयार नहीं हुए। यह नगर-कीर्तन बड़ी धूमधाम से निकला। इसके पश्चात् उनको दिनाजपुर से 'श्रीगौरी-गौरांग आश्रम' की प्रतिष्ठापना के उत्सव में सम्मिलित होने का निमंत्रण आ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गया और वे स्वेच्छा से वहाँ के लिये रवाना हो गये । इस निमन्त्रण में कहा गया था—

"जिन्होंने जगत्शी के नाम-महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी वे स्वनामधन्य ऋषि युगानन्द (श्री महेन्द्रनाथ एम. ए. बी. एस. सी-) इस आश्रम की आयोजना करने वाले थे । उनकी इच्छा थी कि नाम-महायज्ञ के 'यज्ञशेषामृत' को इस आश्रम में स्थापित करके संसार के सब लोगों को उस अमृत का रसास्वादन करायेंगे । पर दुर्भाग्य से उस महायज्ञ को बलात् रोक दिया गया और कीर्तन-प्रचार की योजना में एक बड़ी बाधा उपस्थित कर दी गई जिससे यह कार्य अभी तक रुका रहा । अब भक्तों ने उस सङ्कल्प को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय किया है और उसके लिये वे समस्त प्रेमियों को आमन्त्रित करते हैं ।"

इस समय ठाकुर भी डेढ़ वर्ष का कारावास समाप्त करके छूट गये थे, शेष सहयोगी पहले से ही आ गये थे, अतएव वे सौ से अधिक सहयोगियों को लेकर उत्सव में सम्मिलित हुए । एक बहुत बड़ा नगर कीर्तन का जलूस निकाला गया । उसमें कई हजार नर-नारी प्रेमोन्मत्त होकर कीर्तन कर रहे थे । पुलिस का भय, गवर्नमेंट की चेतावनी, समाज के कुछ नेताओं का विरोध—कुछ भी जनता को उसमें भाग लेने से नहीं रोक सका । इस जलूस में कलकत्ता निवासी यहूदी धर्म के नेता मि०एजरा और बहाई सम्प्रदाय की मिसेज स्टैनार्ड ने भी भाग लिया था ।

योरोपीय महासमर और अरुणाचल मिशन--

इसके कुछ ही समय बाद अगस्त १९१४ में योरोप में युद्ध का दावानल भड़क उठा । जर्मनी के भीषण पराक्रम से ब्रिटिश-सिंह का कलेजा भी काँपने लगा । उस अवसर पर ठाकुर की प्रेरणा से स्वामी अभयानन्द ने भारत के बड़े लाट (वायसराय) के पास एक तार भेजकर प्रार्थना भी कि उनको योरोपीय रणक्षेत्र में जाने की आज्ञा दी जाय जिससे वे दोनों युद्ध करने वाली सेनाओं के मध्य में खड़े होकर भगवान् से महाशान्ति के लिये प्रार्थना कर सकें ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व इसराय ने तार के उत्तर में उनके विचार की प्रशंसा की, पर जाने के विषय में कुछ नहीं कहा।

ठाकुर अध्यात्मवाद के प्रचारक थे और इस कारण विदेशी सरकार के द्वारा इतना निर्यातन सहन करने पर भी उन्होंने अंग्रेज जाति के प्रति कभी द्वेष-भावना नहीं रखी वरन् वे अपने देशवासियों से सदा यही कहते रहे—"भारतवर्ष पूर्वीय सभ्यता की उत्पत्ति और विकास का मूल-स्थान है। यह सभ्यता अध्यात्म-प्रधान है। उधर इङ्गलैंड में जिस पश्चिमीय सभ्यता की उत्पत्ति हुई है वह भौतिकता-प्रधान है। ये दोनों ही अपूर्ण हैं और इस अपूर्णता को दूर करने के लिये ही भगवान् की इच्छा से भारतवर्ष में हिन्दू और अंग्रेजों का सम्मिलन हुआ है। अब तक भारत को अंग्रेजों से जो कुछ सीखना था वह सीख लिया। अब वह समय आ रहा है जब भगवान् के विधानानुसार अंग्रेज भारतवर्ष से जो कुछ सीखना आवश्यक है उसे सीखेंगे। सब प्रकार की शिक्षा, विद्या और सभ्यता बिना आध्यात्मिकता के भाव से सम्पन्न हुए अपूर्ण ही रहती है। इसीलिये इस आध्यात्मिकता-प्रधान भारतभूमि में इन दोनों जातियों का सम्मिलन हुआ है।"

राष्ट्रसङ्घ के सदस्यों से विश्व-शान्ति की अपील—

इसी बीच में योरोपीय महासमर समाप्त हो गया और फ्रांस की राजधानी पेरिस में विजयी और पराजित दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेन्स बुलाई गई जिसका उद्देश्य भविष्य के लिये ऐसी व्यवस्था करना था जिससे पुनः संसार में ऐसा विनाशकारी दृश्य उपस्थित न हो। ठाकुर दयानन्द ने इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर विश्वव्यापी स्थायी शक्ति की एक योजना तैयार करके तार द्वारा इस कान्फ्रेन्स के पास भेजी। तत्पश्चात् उसे छपा कर समस्त देशों के नेताओं तथा विद्वानों और भारतवर्ष के प्रधान सामयिक-पत्रों के पास भी भेजा गया। इस योजना का सारांश इस प्रकार था—

"महायुद्ध की समाप्ति के साथ ही दुनियाँ में शान्ति और उन्नति के एक नये युग का आविर्भाव हुआ है। सभी देशों के राजनीतिज्ञ और दार्शनिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्ति तथा एकता लाने को किसी श्रेष्ठतम तरीके को खोज रहे हैं और उन्होंने कुछ सलाह भी दी है। मैंने भी इस सम्बण्ध में विचार करके एक योजना बनाई है और उसे शान्ति-सम्मेलन के सामने रखने का साहस कर रहा हूँ। पर उसके पहले मैं कुछ नम्र-निवेदन करना चाहता हूँ।''

''युद्ध में एक पक्ष ने विजय प्राप्त की है और वह प्रसन्न है, दूसरा पक्ष पराजित हुआ है और वह अपने को असहाय अनुभव कर रहा। एक बहुत अधिक खुशी मना रहा है और दूसरा खिन्न और दुखी हो रहा है। पराजित राज्यों (जर्मनी और आस्ट्रेलिया आदि) ने सन्धि की शर्तों को इसलिये स्वीकार किया है क्योंकि उनके लिये और कोई रास्ता नहीं था। अगर शान्ति हो जाने पर हारने वाले देशों के लिये कठोर शर्तें रखी जायेंगी तो वे कठोर परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिये उनको स्वीकार तो कर लेंगे, पर उनके मन में तीव्र वेदना होती रहेगी और वे ऐसी सन्धि को तोड़ डालने का अवसर खोजते रहेंगे। इस प्रकार जो दिखावटी शान्ति स्थापित की जायेगी वह कभी यथार्थ और स्थायी नहीं हो सकेगी। इसलिये शान्ति का प्रयत्न मानव-भ्रातृत्व के आधार पर होना चाहिये और उसके द्वारा समस्त मानव जाति को प्रेम तथा एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

अतः मैं पूर्ण सम्मान और नम्रता के साथ शान्ति-सम्मेलन के प्रत्येक सदस्य से ऐसी चेष्टा करने का अनुरोध करता हूँ। जो सज्जन इस शान्ति-सम्मेलन में भाग ले रहे हैं, उनको यह अच्छी तरह याद रखना चाहिये कि इतना महान् उत्तरदायित्व पहले और किसी को नहीं सौंपा गया था। उनके सामने एक बड़ा महान् और पवित्र कार्य है, जिसको उन्हें पूरी योजना से करना होगा। इसके लिये उनको सब प्रकार के जातीय विरोध और सङ्कीर्णता से ऊपर उठ कर विश्व-मानव की कल्याण-भावना का विचार करना होगा। यदि उनको समग्र संसार-हित के लिये अपने राष्ट्र के हित का किसी अंश में बलिदान करना पड़े तो उसमें भी सङ्कोच नहीं करना चाहिये।

शान्ति-सम्मेलन के सदस्यों के सामने असली प्रश्न शत्रु से अधिक से अधिक हर्जाना लेना नहीं होना चाहिये वरन् उनको सबसे पहले उन उपायों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



विचार करना चाहिये जिससे भविष्य में ऐसे युद्धों का होना असम्भव ही अनावश्यक भी हो जाय। अब मैं अपनी उस योजना को आपके सम्मुख रखता हूँ जिससे मेरे विचारानुसार उपर्युक्त उद्देश्य पूरा हो सकता है।

प्रत्येक देश की जनता एक निश्चित अवधि के लिये अपने बीच से एक राष्ट्रपति चुने, जो एक शासन-सभा की सहायता से वहाँ की शासन-व्यवस्था चलायेगा। फिर समस्त देशों के राष्ट्रपति अपने बीच से एक प्रधान राष्ट्रपति का चुनाव करें जो भिन्न-भिन्न देशों द्वारा भेजे गये मन्त्रियों के साथ मिल कर एक विश्व-सरकार बनायें। यह विश्व-सरकार हर एक देश की कार्यवाहियों पर दृष्टि रखेगी और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में विभिन्न देशों के बीच समन्वय की स्थिति उत्पन्न करेगी। यह कार्य इस प्रकार सम्पन्न किया जायगा जिसमे सब देशों को समान रूप से बढ़ने और उन्नति करने का अवसर मिलेगा और कोई एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से अनुचित लाभ नहीं उठा सकेगा।

प्रधान राष्ट्रपति और विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्रपति भी अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि और सेवक समझें। वे सब देशों के निवासियों को अपना भाई समझें। साथ ही वे अपने को संसार भर की शान्ति, सुख और प्रगति के लिये ईश्वर और मनुष्यों के सम्मुख उत्तरदायी समझें।

अगर यह योजना स्वीकार कर ली जाय और इसे कार्य रूप में परिणत किया जाय तो यह प्रतिस्पर्धा और दुर्भावना की मनोवृत्ति को मिटायेगी। इससे श्रम और पूँजी के बीच का संघर्ष दूर होगा और विभिन्न देशों के आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय भेदभाव मिट जायेंगे। इससे किसी देश के निवासियों की कुछ भी हानि नहीं हो सकती, वरन् वे हर जगह लाभ में ही रहेंगे। वे अपनी संस्कृति से तो लाभान्वित होंगे ही साथ ही अन्य सब जातियों की संस्कृतियों की विशेषताओं से भी लाभ उठा सकेंगे। इस योजना में उच्चता और निम्नता अथवा स्वामित्व और दासता का कोई प्रश्न नहीं उठ सकता। इसलिये उनमें न तो ईर्ष्या की भावना रहेगी और न सेना-सज्जा की आवश्यकता होगी। मैं अपने हृदय में अनुभव करता हूँ कि संसार की कठिन समस्याओं को हल करने का एकमात्र यही उपाय है, अन्य कोई नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



यह सच है कि इस आदर्श को पूरा करने में बहुत बड़ी-बड़ी और अनेक कठिनाइयाँ हैं। पर संसार में शान्ति और ऐक्य स्थापित करने के लिये इस योजना को कार्यान्वित करना ही होगा। चाहे दुनियाँ के राष्ट्रों में से कुछ परस्पर में समझौता करके कोई सङ्गठन बनालें और उसे विश्व-शान्ति के नाम से पुकारने लगें, पर सच्ची शान्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि इस आदर्श को स्वीकार करके पूरा न किया जाय। वास्तव में इस विश्वव्यापी महासमर का स्वाभाविक परिणाम इस प्रकार का कोई 'राष्ट्र-संघ' ही होना चाहिये।

"शान्ति सम्मेलन के सदस्यों का कर्तव्य है कि वे राष्ट्रीय अहङ्कार और पक्षपात की भावना को सर्वथा त्याग दें। तब उनको इस प्रकार समस्त राष्ट्रों को मिलाकर एक महा-राष्ट्र निर्माण करने से बढ़ कर उच्चतर आदर्श और कोई प्रतीत नहीं हो सकेगा। अब संसार एक ऐसे स्थल पर आ पहुँचा है जबकि इस कार्य में देर नहीं की जानी चाहिये। यह समय इसके लिये पूर्णतः अनुकूल भी है और अब इस दिशा में कोई गम्भीर प्रयत्न किया ही जाना चाहिय। मैं आशा करता हूँ कि शान्ति परिषद् के सदस्य इस महान् कार्य से पश्चात्पद न होंगे। यह समस्त जातियों का विधाता-पुरुष उनको पृथ्वी पर स्वर्ग-राज्य स्थापन का साहस प्रदान करे!"

इस प्रकार ठाकुर दयानन्द ने संसार के तत्कालीन कर्णधारों और शासनाध्यक्षों के सामने वह प्रस्ताव रख दिया, जिस पर निश्चय ही एक दिन सबको अमल करना पड़ेगा, अन्यथा आधुनिक मानव-सभ्यता पूर्णरूप से ध्वन्स हो जायगी। पर शक्ति और वैभव से गर्वित मनुष्य इन सत्य सिद्धान्तों को शीघ्र नहीं समझता और समझ भी लेता है तो अहङ्कार अथवा स्वार्थ के कारण उनके अनुसार आचरण करने को प्रस्तुत नहीं होता। वही बात उस अवसर पर हुई। जीतने वाले राष्ट्रों ने एक झूँठ-मूँठ का राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) बना डाला जो कुछ ही वर्षों में हास्यास्पद स्थिति को प्राप्त हो गया और दूसरा महायुद्ध आरम्भ हो जाने पर जिसकी अन्त्येष्टि-क्रिया सम्पन्न कर दी गई।

ठाकुर दयानन्द ने यह योजना सन् १९१८ में शान्ति-परिषद् के सन्मुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपस्थिति की थी, अब पचास वर्ष बाद तीसरे विश्वव्यापी ही नहीं सर्वनाशी संग्राम की तैयारी देखकर उसकी याद लोगों को आ रही है। यद्यपि इस बार जो राष्ट्र सङ्घ (यू० एन० ओ०) बना है वह पहले की अपेक्षा बहुत अधिक कार्यशील है और कई छोटे-मोटे युद्धों को रोक चुका है, तो भी अभी इस बात के लक्षण कम ही दिखाई पड़ते हैं कि वह विभिन्न देशों के राष्ट्रीय-अहङ्कार और स्वार्थ की मनोवृत्ति को उस प्रकार परिवर्तित कर सके जैसा उपर्युक्त योजना में सुझाव दिया गया है। मालूम पड़ता है कि संसार की महाशक्तियाँ (ग्रेट पावर्स) अपने पूर्व कर्मों का परिणाम भोगे बिना नाश के मार्ग को न छोड़ सकेंगी।

नवयुग आगमन का सन्देश—

इस प्रकार ठाकुर दयानन्द का लक्ष्य आरम्भ से ही संसार को एक ऐसे आने वाले युग का सन्देश देता रहा जिसमें मानव-सभ्यता का एक मात्र उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति की सुख-सुविधा का ध्यान रखना होगा। इसके लिये उन्होंने दो मुख्य सिद्धान्तों पर विशेष रूप से जोर दिया—एक मानव-मात्र को समान अधिकार और दूसरा सांसारिक व्यवहार में आध्यात्मिकता का समावेश। इसकी व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा—

"मानव-जीवन का लक्ष्य स्थायी आनन्द प्राप्त करना है जब तक यह लक्ष्य प्राप्त न होगा तब शिक्षा, सङ्गठन, साधना सब व्यर्थ रहेंगे। चाहे शिल्प और वाणिज्य की वृद्धि होकर अपरिमित धन इकट्ठा हो जाय, चाहे गाँव-गाँव कस्बे-कस्बे में विद्यालय खुलकर लोग विद्वान् बन जायें, बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार किये जायें, पर इनसे समाज की उन्नति का प्रमाण नहीं मिल सकता। जब तक समाज के सब सदस्यों की दीन-हीन अवस्था में पड़े व्यक्तियों की अवस्था का सुधार नहीं होगा, वे सुखी नहीं होंगे, तब तक उन्नति की बात करना व्यर्थ है। हमको प्रत्येक कार्य की सफलता का निर्णय इसी दृष्टिकोण से करना चाहिए।"

पर साथ ही वे यह भी कहते थे कि वह सुख क्षणस्थायी न होकर स्थायी होना चाहिये। जो सुख थोड़ी ही देर में दुःख में परिवर्तित हो जाय वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



किस काम का ? ऐसे सुख से न व्यक्ति का लाभ है न समाज का। इस अवस्था में समाज का प्रत्येक सदस्य सुख का साधन समझे जाने वाले पदार्थों का अधिक से अधिक अपने लिये प्राप्त करना चाहता है जिससे उसकी स्थिति स्थिर बनी रहे । पर यह केवल एक भ्रम ही होता है। उन्होंने इसकी विवेचना करते हुए कहा था—

"हम आतिशवाजी के प्रकाश की तरह क्षणस्थायी सुख नहीं चाहते, जिससे दूसरे ही क्षण अवसाद आ जाय। हम तो अन्तरात्मा में एक सघन, निर्मल आनन्द-धारा का प्रवाहित होना चाहते हैं। हमारा जीवन—एक आनन्द सङ्गीत में परिणत हो जाय यही मानव-जन्म का लक्ष्य है । यदि इस प्रकार का सच्चा आनन्द एक व्यक्ति भी प्राप्त कर लेता है तो वह चारों तरफ विस्तीर्ण होने लगता है। जिस किसी प्रयत्न से इस लक्ष्य के प्राप्त होने में सहायता मिले उसी को उन्नति समझना चाहिये, शेष सब तो कूड़ाकर्कट है।"

उन्नति का आधार धर्म ही है---

ठाकुर दयानन्द विश्व-शान्ति का मूल आधार धर्म को ही मानते थे। उनका विश्वास था कि केवल राजनीतिज्ञों की चेष्टा से इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकती। उन्होंने कहा—"जब तक सम्पूर्ण विश्व में एक धर्म का विस्तार न होगा, जब तक एक व्यक्ति दूसरे को भाई की तरह न समझेगा तब तक भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में एकता के भाव का उदय होना असम्भव है। आज एक मजहब के अनुयायी दूसरे मजहब वाले को, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को मिटाने पर तुले हुए हैं। संसार की इस मनोवृत्ति में परिवर्तन करना होगा। मैं संसार की विकृत मनोवृत्ति को दूर करके नया युग या सत्युग लाना चाहता हूँ। धर्म में बाह्य-आडम्बर की आवश्यकता नहीं। उसकी आत्मा है ईश्वर के अस्तित्व में सतत विश्वास रखना । इस सतत सत्य को धर्म के सभी सच्चे अन्वेषकों ने जाना है। यह कहना कि यह अमर सत्य हिन्दू या इस्लाम धर्म के ही पास है, मिथ्या है। ईसा, मुहम्मद, बुद्ध इत्यादि सब उसी अमर सत्य को प्रकट करने वाले थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह कहना कि अमुक धर्म ने ही इस अमर सत्य का ज्ञान प्राप्त किया, हास्यास्पद है—अज्ञान का द्योतक है।

"समय-समय पर ईश्वर ने व्यक्त प्रेम और एकता का सन्देश देने के लिए अवतार भी लिया है। इन अवतारों के ज्ञान-प्रकाश द्वारा ही हम उस अमर सत्य के निकट तक पहुँच पाते हैं। मनुष्य की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुकूल जान पड़ने वाले अवतार की ही शिक्षा ग्रहण कर सकता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह अन्य धर्मानुयायिओं से प्रेम न करे, क्योंकि सभी अवतारों का आदर्श और उद्देश्य तत्वतः एक समान होता है। किसी धर्म विशेष का ग्रहण करना हमको अन्य धर्मों का शत्रु बनने को नहीं कहता। प्रत्येक धर्म विश्व-समाज की दृष्टि से दूसरे धर्मों का सहायक अङ्ग है, प्रत्येक का स्थान समान है, प्रत्येक विश्व के लिये जरूरी है। आधुनिक समाज को अब ऐसे धर्मों की जरूरत नहीं है, जो मनुष्यों को एक खास स्थान या विशेष समाज के भीतर सीमित करदें। अब ज्यों-ज्यों हमारे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों हमें एक ऐसे धर्म की अनिवार्य आवश्यकता होती जाती है जो समस्त विश्व के लिये हो और ऐसा धर्म केवल प्रेम और विश्व बन्धुत्व के अतिरिक्त दूसरा नहीं हो सकता।"

ठाकुर दयानन्द ने आधुनिक समय में जैसे धर्म की आवश्यकता बताई है उसको संसार के सभी विचारशील व्यक्ति अनुभव कर रहे हैं। अधिकांश धर्मों की सङ्कीर्णता के कारण वर्तमान युग के शिक्षित लोगों को यह विचार हो गया है कि मनुष्य जाति के लिये धर्म आवश्यक नहीं है, वह केवल मन बहलाव की वस्तु है। पर इसका कारण यही है कि उन्होंने धर्म के वास्तविक स्वरूप पर विचार नहीं किया है और धर्म के ऊपरी विधि-विधानों और रस्मों को ही सार-वस्तु मान लिया है।

सच्ची बात यह है कि धर्म मनुष्य के लिये वैसा ही आवश्यक है जैसे कि वायु और प्रकाश। मनुष्य को जिस आन्तरिक शान्ति और सुख की आवश्यकता है उसकी पूर्ति के लिये धर्म का होना अनिवार्य है। पर वह धर्म एक देशीय अथवा एक जातीय नहीं होना चाहिये और न उसका आधार बाहरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



रीति-रिवाजों और विभिन्न प्रकार के पूजा और उपासना की पद्धतियों पर होना चाहिए। इस आवश्यकता की पूर्ति केवल एक विश्व-व्यापी धर्म ही कर सकता है। ठाकुर के शब्दों में "ऐसा विश्व-धर्म वही हो सकता है जिसमें सबको अपने में निहित कर लेने की शक्ति हो। किसी को भी न त्यागना उसका मुख्य गुण होना चाहिये। जो धर्म छूत-अछूत, मोमिन-काफिर, आस्तिक-नास्तिक इत्यादि का भेद उत्पन्न करता है और किसी भी मनुष्य के ईश्वर के मन्दिर में प्रवेश करने से रोकता है वह धर्म नहीं है, आडम्बर है। अब ऐसे धर्म की आवश्यकता नहीं। ऐसा धर्म वर्तमान समाज की जरूरतों की पूरा नहीं कर सकता। संसार को आज उस धर्म की आवश्यकता है जो अखिल-विश्वव्यापी प्रेम का प्रसार करे। जिसकी शिक्षा विश्व-प्रेम हो और जिसकी आत्मा विश्व-बन्धुत्व-मय हो।"

विश्व की समस्या और भारतीय स्वाधीनता---

"अरुणाचल मिशन' आरम्भ से भारतीय स्वाधीनता का समर्थक रहा है। उसकी मान्यता है कि इस समय पश्चिमी देश जिस प्रकार भौतिक विचार धारा में बहते जा रहे हैं और संसार को दबाकर अपनी प्रधानता के मद में नाश के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, उसे देखते हुए इस बात की कोई आशा नहीं कि वे विश्व-शान्ति के लिये सच्चे हृदय से प्रयत्न करेंगे। इसके लिये केवल भारत ही तत्पर हो सकता है क्योंकि वह एक ऐसी आध्यात्मिक संस्कृति का उत्तराधि-कारी है जिसमें सदा से मनुष्य मात्र को एक ही परम पिता की सन्तान माना गया है और प्रत्येक के साथ वैसा ही व्यवहार करने का आदेश दिया गया है जैसा कि हम अपने लिये पसन्द करते हैं। इसलिये 'अरुणाचल मिशन' बराबर यह आवाज उठाता रहा है कि संसार के उद्धार के लिये भारत की स्वाधीनता अनिवार्य हैं। सन् २५ में ठाकुर दयानन्द का निम्न सन्देश काँग्रेस के नेताओं के पास भेजा गया था—

"भारत का भविष्य ईश्वर द्वारा ही पूर्व निर्धारित है। भारतीयों को हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिये कि अनेकानेक आपदाओं के होते हुए भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



भारतवर्ष जो जीवन्त रखा है, इसके पीछे ईश्वर का कोई विशिष्ट उद्देश्य ही है। इस विश्व में भारत की स्थिति किसी महान् और विराट् उद्देश्य की पूर्ति के लिये है। उसने ऐसा किया भी है और तभी वह आज तक टिका हुआ है, जब कि उसके सामने ही जन्म लेने वाले कितने ही राष्ट्र नष्ट हो गये। विश्व के सामने भारत को अपना वह आदर्श रखना है जिसके द्वारा विश्व को मार्ग-दर्शन मिल सके।

"संसार की राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के प्रयास असफल हो चुके हैं और वह कभी सफल हो भी नहीं सकते। बल्कि उससे अनेकानेक नई समस्याएँ उत्पन्न होती जाती हैं, जिनका समाधान नहीं मिल रहा है। अब एकमात्र आध्यात्मिकता का ही अवलम्बन रह गया है और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में नेतृत्व करने वाला भारत को छोड़कर दूसरा कौन है? व्यष्टि के साथ-साथ समष्टि को भी मोक्ष दिलाने वाला भारत के अतिरिक्त दूसरा कौन है? भारत ही यह कर सकता है और इसीलिये अब तक इसका अस्तित्व अक्षुण्ण रहा है। आध्यात्मिक नेतृत्व करके उसे विश्व को दिखला देना है कि त्याग और भोग में किस प्रकार समन्वय स्थापित किया जा सकता है? आसक्ति और विरक्ति के बीच सन्तुलन कैसे स्थापित हो सकता है? भारत को आध्यात्मिकता और भौतिकता के समन्वय का आदर्श विश्व के सामने रखना है।"

पर वर्तमान समय में भारत भी मार्गभ्रष्ट हो रहा है। पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से 'धर्म' को अनावश्यक बतलाने वाले थोड़े-से ऊपरी तड़क-भड़क पर लट्टू होने वाले युवकों की बात हम नहीं कहते, वरन् इस देश के ९० प्रतिशत नर-नारी जो ईश्वर का नाम लेते हैं, उनके नाम पर मूर्तियों का दर्शन, पूजन करते हैं, वे भी अध्यात्म से कोसों दूर हैं और 'लकीर पीटने' की तरह 'धर्म' पालन करते हैं। इसको देखकर ठाकुर ने कहा था—'-इस समय भारतवासियों का जीवन भी आध्यात्मिक नहीं है, वरन्, उसमें तामसिकता की ही प्रधानता है। अभी स्थिति यही है कि लोग ईश्वर की स्थिति मन्दिरों में ही मानते हैं, जहाँ फूल चढ़ा लेना अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं। इसी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे 'धर्म' मान लेते है। उनके व्यावहारिक जीवन के क्षेत्र में भी ईश्वरीय विधान ही हमारे आचरण का मूल आधार होना चाहिए।"

उन्होंने यह भी कहा—"सर्वप्रथम आध्यात्मिक चेतना को जगाना होगा। आत्म चेतना लानी होगी। जब तक आदमी आत्म-चेतन नहीं हो जाता उसके सारे प्रयास तब तक व्यर्थ हैं। सच्चे अर्थ में वही स्वतन्त्र है जिसकी आत्मा स्वतन्त्र है।"

ठाकुर भारतीय स्वाधीनता के प्रबल पक्षपाती थे और इसलिये प्रत्येक अवसर पर उसके नेताओं के पास भारत को पूर्ण स्वाधीन घोषित करने के लिए सन्देश भेजते रहे। पर वे ऐसी स्वाधीनता नहीं चाहते थे "जिसमें केवल कल-कारखानों की, उद्योग धन्धों की, गरीब-अमीरों की, मालिक मजदूरों की वृद्धि होती चली जाय, जिसमें हमको भी अन्य देशों की तरह तोप, बन्दूक और बमों के भरोसे ही रहना पड़े। सेना की इस तैयारी पर जो करोड़ों ही नहीं अरबों रुपया खर्च करना पड़ेगा उससे जनता के कल्याणकारी कार्यों में खर्च करने के लिये क्या शेष रहेगा ? इतना ही नहीं इससे तो सामान्य वर्ग पर करों—टैक्सों का इतना भार लद जायगा कि वह स्वाधीनता उल्टी मँहगी जान पड़ेगी।"

इतना ही नहीं, भारत यदि भौतिकवाद को छोड़कर अध्यात्म के मार्ग को पसन्द भी करले, युद्ध से विरत होकर अपने साधनों को लोक-कल्याणकारी कार्यों में लगाने की इच्छा करे, तो भी ये बातें केवल उसके हाथ में नहीं हैं। यदि दूसरा राष्ट्र लोभ या द्वेषवश युद्ध छेड़ ही दे तो उसे भी युद्ध की ज्वाला में कूदना ही होगा और तब इसकी भी वही दुर्दशा होगी जो भौतिकता के वेग में अन्य देशों की हो रही है। इसलिये भारतवर्ष का हित भी तब तक नहीं हो सकता, जब तक समस्त संसार में विश्वबन्धुत्व और विश्व शान्ति की भावना वास्तविक रूप में प्रसारित न हो। इसलिये 'अरुणाचल मिशन' आरम्भ से इस सिद्धान्त की घोषणा करता रहा है—

माता च पार्वती गौरी, पिता देवो महेश्वरः।
भ्रातरो मानवाः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका यह भी अभिमत है कि "भारत की वास्तविक सुरक्षा इसी में है कि विश्व की समस्त जनता स्वतन्त्र हो जाय। इस समय भारत तथा अन्य सभी देशों की समस्याओं के समाधान का एक ही उपाय है—विश्व-सङ्घ की स्थापना। यह विश्व-सङ्घ ही संसार में शान्ति रख सकता है, किसी युद्धोन्मादी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से लड़ने से रोक सकता है। इसकी स्थापना में भारतवर्ष का नेतृत्व होना चाहिए, इसी के प्रयास से इसका सङ्गठन होना चाहिए। इसी में विश्व का कल्याण है, भारतवर्ष का तो है ही।"

विश्व-सङ्घ का विचार ईश्वर प्रेरित है—

ठाकुर दयानन्द ने तथा और भी बहुसंख्यक मनीषियों ने विश्व-संघ की जो भावना प्रकट की है, अनेक प्रकार की योजनाएँ प्रस्तुत की हैं, उनको हमारे अनेक देशवासी कल्पना प्रसूत अथवा 'मन के लड्डू' बतलाते हैं। उनका कहना है कि संसार में ऐसा समय कभी नहीं आ सकता जब सब मनुष्य शान्ति के अनुयायी बनकर लड़ना-भिड़ना सर्वथा त्याग दें। हमारे वे देशवासी ही ऐसी बात नहीं कहते जर्मनी के 'नित्शे' जैसे दार्शनिक ने भी युद्ध का खुलकर समर्थन किया है और उसे राष्ट्र के उत्थान का मुख्य साधन बतलाया है। पर इसका परिणाम यह हुआ कि जर्मनी ने दो बार अपना सर्वस्व दाँव पर लगाकर समस्त संसार में युद्ध का दावानल भड़का दिया, पर अन्त में उसी को ध्वस्त और त्रस्त होना पड़ा और आज उसे संसार का कर्ता धर्ता बनने के बजाय अमरीका और रूस जैसे राष्ट्रों के सम्मुख पदावनत होना पड़ रहा है।

वास्तव में विश्व-संघ की भावना कोई नई चीज नहीं वरन् एक ईश्वर प्रेरित सत्य है। "मानव की सृष्टि के साथ-साथ मानव-जाति के महामिलन का विचार भी सृष्टिकर्ता के मन में था। सूक्ष्म-जगत् अथवा भाव-जगत् में भगवान् की यह विचार धारा सदा से मौजूद है और कालप्रवाह में मानव के क्रम-विकास के साथ-साथ थोड़ा-थोड़ा करके इसकी वृद्धि होती रही है। स्थान, काल और पात्र के भेद से यह आदर्श मनुष्यों के विचार, वाणी और कार्य द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकट होने की चेष्टा करता रहा है। भाव-जगत् में तो इसका अस्तित्व बहुत समय से अनुभव किया जा रहा है, पर स्थूल-जगत् में उसके कार्यरूप में परिणत होने का एक निर्दिष्ट समय है।"

यह ईश्वरीय प्रेरणा ही है कि आज से हजारों वर्ष पहले वैदिक ऋषियों ने 'सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनाँसि जानताम्' (मानव-सन्तान ! तुम एक साथ गमन करो, एक साथ उच्चारण करो और समान रूप से विचार करो) की ध्वनि उठाई थी। भारतीय पुराणकारों ने 'सत्युग' का, ईसाई संतों ने 'पृथ्वी पर ईश्वर के स्वर्ग-राज्य' के आगमन का और सूर-तुलसी जैसे महा-कवियों ने 'राम-राज्य' का सन्देश समय-समय पर सुनाया था।

दैववाणी को सुनने और ग्रहण करने वाले आध्यात्मिक महापुरुषों के अतिरिक्त अन्य अनेक विचारक और राजनीतिक पुरुष विभिन्न भावों से प्रेरित होकर समस्त विश्व का एक सङ्गठन बनाने की योजना और प्रयत्न करते रहे हैं। ऐतिहासिक काल के आरम्भ में यूनानी और रोमन जाति वालों ने समस्त देशों को जीत कर एक विशाल साम्राज्य (World Empire) सङ्गठित करने की चेष्टा की थी। रोम के पोप ने युद्ध के द्वारा संसार में एक 'ईसाई-साम्राज्य' (Holy Roman Empire) स्थापित करने का स्वप्न देखा था। इसी प्रकार टर्की के सुलतानों ने एक संसार-व्यापी 'मुस्लिम-साम्राज्य' के निर्माण के लिये दूर-दूर के बहुसंख्यक देशों को जीतकर वहाँ तलवार के ज़ोर से अपने धर्म को फैलाया था और तो क्या अब से दो-सौ वर्ष पहले फ्राँस के रण देवता नैपोलियन ने अपनी सैनिक शक्ति के द्वारा समस्त संसार को जीत कर फ्रांसीसी-साम्राज्य के अन्तर्गत एक सूत्र में सङ्गठित करने की महत्त्वाकाँक्षा की थी। यद्यपि इन सब प्रयत्नों के भीतर सङ्कीर्ण राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता की हीन भावना की प्रधानता थी और इसीलिये इनकी सफलता अल्पकाल स्थायी ही हो सकी। तो भी अपरोक्ष रूप से इनके भीतर मानव-जाति को सङ्गठित करने की मूल-भावना मौजूद थी।

जिन विचारकों ने ऐसी चेष्टा की उनमें सबसे पहले जिस व्यक्ति का परिचय मिलता है वह योरोप का एक धर्म प्रचारक था जिसने सन् ११८२ में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युद्ध के विरोध में 'शान्ति-भ्रातृ-मङ्घ' (ब्रदरहुड आफ पीस) की स्थापना की थी। सन् १३०५ में 'पिरे डुबस' ने 'धर्मराज्य का पुनरुद्धार' (रीकवरी आफ होली लैण्ड) नामक ग्रन्थ लिखकर उसे इङ्गलैण्ड के सम्राट् प्रथम एडवर्ड को समर्पित किया। इसमें युद्ध निवारण के लिये एक 'राष्ट्र-संघ' (लीग आफ गवर्नमेंट) की स्थापना का प्रस्ताव किया गया था। सोलहवीं शताब्दी में विलियम शिवर ने (लीग आफ पीस) की योजना बनाकर प्रिंस चार्लस के सम्मुख उपस्थित की। सत्रहवीं सदी में एमेरिककूसि ने युद्ध निवारण और अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान करने के लिये 'न्यू साइनियस' ग्रन्थ में युद्ध से होने वाली हानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उसने यह भी कहा कि अगर युद्ध करना आवश्यक हो जाय तो 'धर्म-नियमों' के अनुसार किया जाय।

सत्रहवींशताब्दी के अन्त में जब फ्रांस के शासक 'लुई चौदहवें' ने योरोप के बहुत बड़े भू-भाग को विध्वस्त कर दिया तो अँगरेजी के प्रसिद्ध लेखक विलियम पेन ने सन् १६६७ में 'योरोप की वर्तमान और भावी शांति' के नामक एक ग्रंथ प्रकाशित किया जिसमें बतलाया गया था कि योरोप में किस प्रकार स्थायी शान्ति रखी जा सकती है। विभिन्न देशों के विवादों का निर्णय करने के लिये उसने एक 'योरोपियन पार्लियामेंट' संगठन करने का प्रस्ताव किया था। जो देश इस पार्लियामेण्ट के आदेश को न मानेगा उसको सब देश मिलकर दण्ड दें।

जिन योरोपीय दार्शनिकों ने इस समस्या पर विचार किया उनमें सबसे पहला रूसी था जिसने सन् १७६१ में "योरोपियन संघ द्वारा (A lasting peace through the federation of Europe) नामक ग्रंथ में योरोप के देशों में शान्ति स्थापन की एक योजना उपस्थित की। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इंगलैण्ड के जैरमी बेन्थम ने 'विश्व-व्यापी स्थायी शान्ति की योजना' (ए प्लानफॉर यूनीवर्सल एण्ड परपैचुअल पीस) ग्रन्थ लिखा था जिसमें अस्त्र शस्त्रों को कम करने, पराधीन देशों को स्वाधीन बनाने और एक अन्तर्जातीय न्यायालय स्थापित करने के प्रस्ताव थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने नैतिक बल पर विशेष जोर दिया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १७९५ में सुप्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक कान्ट ने 'चिरस्थायी शान्ति' (प्रोजैक्ट फॉर ए परपैचुअल पीस) नामक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित किया। इसमें विश्व-संघ की योजना पर बड़ी स्पष्टता से विचार किया गया था और प्रस्ताव किया गया था कि सर्वप्रथम समस्त देशों में प्रजातन्त्र शासन (रीपबलिक) की स्थापना की जाय और फिर सब मिलकर एक 'राष्ट्रसंघ' संगठित करलें। सब देशों के निवासी अपने को विश्व-राज्य की प्रजा (वार्ल्ड-सिटीजन) मानें। स्थायी सेना का अन्त कर दिया जाय। कान्ट की योजना में दो बातें विशेष उल्लेखनीय थीं। पहली बात तो उसने यह कही कि "समस्त मानव-जाति अन्त में एक 'महा-राष्ट्र' में परिणत हो जाय, यह ईश्वरीय विधान है।" दूसरी बात यह है कि "आर्थिक कारण से बाध्य होकर विचारशील व्यक्ति संसार में से युद्ध—प्रथा को हटा देंगे।" इसमें सन्देह नहीं कि कान्ट की योजना अन्य सब योजनाओं से अधिक विचारपूर्ण और उत्कृष्ट थी। पर उस समय की स्थिति को देखते हुए उसने स्वयम् इसको सम्भव नहीं माना और एक सुन्दर आदर्श के रूप में ही इसको उपस्थित किया।

सन् १८१८ में 'अमेरिकन शान्ति समिति' स्थापित हुई। तब से आज तक वह अन्तर्जातीय कानूनों द्वारा जगत् में शाँति स्थापित करने की बात मनुष्यों को सुनाती—समझाती रहती है। सन् १८६८ में 'बहाई' सम्प्रदाय के गुरु 'ऋषि बहाउल्ला' ने समस्त मानव-जाति में शान्ति स्थापन पर विचार प्रकट किए और विभिन्न देशों के विवादों का निर्णय करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय स्थापित करने की बात भी कही। सन् १८९९ में हालैण्ड के 'हेग' नगर में वास्तव में एक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कायम कर दिया गया जो आज तक अपना काम करता चला जाता है।

यद्यपि इन योजनाओं और चेष्टाओं का विशेष परिणाम उन्नीसवीं शताब्दीके अन्त तक प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं पड़ा, पर इसने उस ईश्वरीय आदेश को, जो आरम्भ में केवल 'भावरूप' में ही था 'वाणीरूप' में परिणत कर दिया। इसके फल से संसार में 'विश्व-शान्ति' की एक विचारधारा प्रवाहित होने लगी, लोग उसके सम्बन्ध में चर्चा करने लगे और उसे उसी समय नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो आगे चलकर सम्भव मानने लगे। ठाकुर दयानन्द इन 'शांतिदूतों' की श्रेणी में एक अन्यतम व्यक्ति थे। उन्होंने अपने कार्यक्रम में इस सिद्धान्त को स्वीकार किया और मुक्तकण्ठ से घोषणा की—

"मैं देखरहा हूँ कि संसार में विश्व-बन्धुत्व की भावना परिव्याप्त हो गई है और एक ही विश्व-धर्म पूर्व और पश्चिम की मिलन भूमि बन गया है।"

इन महानुभावों का प्रयत्न व्यर्थ नहीं गया। इस जगत् की रचना ईश्वर और प्रकृति ने जिस प्रकार की है उससे एक तिनका का गिरना भी निरर्थक नहीं होता। फिर ऐसे अध्यात्म-शक्ति के पुञ्ज महामानवों की विचार-धारा—संकल्प-शक्ति बिना किसी प्रकार का प्रभाव प्रकट किये ही व्यर्थ चली जाय यह त्रिकाल में सम्भव नहीं। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही समस्त मानव-जाति इससे प्रभावित होने लग गई और योरोपीय महा-समर की समाप्ति के उपरान्त तो योरोप, अमरीका तथा अन्य महाद्वीपों में भी शान्ति आन्दोलन आँधी की तरह फैल गया। योरोप के सभी देशों में 'नो मोर वार', 'युद्ध विरोधी-संघ' (वार रैसिस्टर्स लीग) जैसी संस्थाएँ हजारों की संख्या में स्थापित होने लगीं और सैकड़ों व्यक्ति 'अनिवार्य फौजी तालीम' लेने से इनकार करके जेलों में चले गये। जर्मनी और इंगलैंड के बड़े-बड़े हथियार बनाने वाले कारखानों में खेती के औजार और मशीनें बनने लगीं। अमरीका के सबसे बड़े उद्योग-पति हेनरी फोर्ड ने कहा कि "मैं संसार के सब राष्ट्रों के जंगी जहाजों को लोहे के मूल्य पर खरीदने को तैयार हूँ। मैं उनको तोड़ फोड़ कर खेती करने वाले 'ट्रैक्टरों' तथा अन्य मशीनों के रूप में परिवर्तित कर दूँगा।"

आज भी, जब संसार में असम्भव समझी जाने वाली घटनायें आँखों के सामने हो रही हैं और "युग-परिवर्तन" का समय कुछ ही कदम दूर रह गया है, ऐसे लोगों का अभाव नहीं जो अपने 'नासाग्र' से अधिक दूर देखना नहीं चाहते अथवा जिनमें दूर-दर्शन की शक्ति ही नहीं है। हमने ऊपर जो संसार के गत आठ-नौ-सौ वर्षों के शान्तिकामी विचारकों का परिचय दिया है यदि उनके विचारों तथा योजनाओं का क्रम विकास देखा जाय तो मालूम होता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हम 'विश्व-संघ' के आदर्श पर कितनी दूर बढ़ आये हैं। जो बात दो-तीन-सौ वर्ष पहले केवल कुछ उदार विचार वाले लेखकों की कल्पना जान पड़ती थी आज वह १०० नहीं तो ५० प्रतिशत कार्य रूप में परिणत हो चुकी है। 'यूनाइटेड नेशंस' के कार्यालय में निरन्तर संसार के सौ से अधिक राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक जगह बैठकर संसार की छोटी-बड़ी सैकड़ों समस्याओं पर विचार करना और उनमें से अधिकांश को कार्य रूप में परिणत करना सामान्य परिवर्तन नहीं है। यह हमको निश्चित रूप से विश्वास दिलाता है कि आज नहीं तो कल "विश्व-राज्य का ईश्वरीय-विधान" मूर्त रूप धारण करने वाला है।

'अरुणाचल मिशन' की स्थापना के समय ठाकुर का लक्ष्य भारतवर्ष की स्वाधीनता था, पर उसमें समस्त विश्व की स्वाधीनता का भाव भी पूर्णतया सन्निवेशित था। सन्तोष और हर्ष का विषय है कि आज भी वह उसी मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। अभी उसकी तरफ से प्रकाशित "भारतेर मुक्ति साधनाय 'अरुणाचलेर अवदान' पुस्तक में कहा है—

"विश्वशांति, विश्वमुक्ति, विश्व में रहने वाले प्रत्येक नर-नारी की पार्थिव और आध्यात्मिक सर्वाङ्गीण पूर्णता के लिये 'अरुणाचल' गत अर्द्धशताब्दी से तपस्या करता आया है। भारत भी इस विराट्-विश्व का एक अङ्ग है और जगत् के कल्याण के लिये भारत की मुक्ति अनिवार्य रूप से आवश्यक है—इसी भावना को लेकर हम इसकी स्वाधीनता के लिये प्रयत्नशील थे। 'अरुणाचल' ने भारत की स्वाधीनता को कभी एक खण्ड-समस्या के रूप में नहीं देखा, वरन् भारत की पराधीनता को जगद्व्यापी पराधीनता का एक प्रतीक रूप मानकर, समस्त विश्व के कल्याण साधन के लिए—विश्व-शान्ति के लिये ही यह कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हुआ है।"

इस महान् परिवर्तन के सूत्रधार के रूप में अनेक लोग 'अवतार' का प्रश्न भी उठाते हैं। उनका विचार है कि संसार की कायापलट करने वाली इतनी बड़ी घटना बिना किसी अलौकिक शक्ति के नहीं हो सकती। इसलिये जितनी संस्थायें और 'संघ' नवयुग आगमन का प्रचार कर रहे हैं उनमें प्रायः किसी न किसी रूप में दैवी शक्ति के अवतरण का विश्वास भी पाया जाता है। 'अरुणा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चल मिशन' के अनुयायी भी ठाकुर केकार्यों को—'मिशन' को अलौकिक ही मानते हैं। पर स्वयम् ठाकुर ने कभी इस बात पर जोर नहीं दिया, वरन् उन्होंने बार-बार यही कहा—

"अवतार ढूँढ़ते फिरने की क्या आवश्यकता है? प्राणों को प्रिय मनुष्य मिलना चाहिए, जहाँ जाने से प्राणों की प्यास मिटे उसी तरह के मनुष्य की आवश्यकता है।"

"अखण्ड-ज्योति" की 'युग-निर्माण' योजना 'विश्व-ऐक्य' के आदर्श पर ही आधारित है। यद्यपि हमको एक-एक सीढी पर ही क्रमशः चढ़ना पड़ेगा, पर अन्तिम लक्ष्य 'विश्व-मानव' का आविर्भाव ही है। इसके बिना अब संसार की गति नहीं है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'अखण्ड-ज्योति' अपने देशवासियों में और फिर उनके द्वारा समस्त विश्व में आध्यात्मिकता का प्रसार करने को कृत-सङ्कल्प है। इसकी विवेचना करते हुए हमने अपने नवम्बर ६७ के अङ्क में लिखा था—

"अध्यात्म-भावना के प्रसार का परिणाम यह होगा कि मनुष्यों का दृष्टिकोण विशाल बनेगा और वे 'विश्व-मानव' की भावना को ग्रहण करने लगेंगे। आजकल विभिन्न देशों के निवासियों में धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों, भाषा, शिष्टाचार आदि सम्बन्धी जो अन्तर पाया जाता है, वह आगे चलकर पारस्परिक सद्भावना, सहयोग और मिलते-जुलते रहने के साधनों की वृद्धि होने से कम होता चला जायगा। इससे विभिन्न जातियों और नस्लों के व्यक्तियों के बीच भेद-भावना मिटने में बहुत सहायता मिलेगी और सौ-पचास वर्ष बाद ऐसा समय आ जायगा जब कि एक परम-पिता के 'पुत्र' होने के नाते समस्त मनुष्य एक ही मानव-परिवार के सदस्य समझे जाने लगेंगे। संसार में इस प्रकार के मानव-धर्म का विकास होने पर वर्तमान समय में विभिन्न मजहब वालों में जो पारस्परिक घृणा और द्वेष की प्रवृत्ति पाई जाती है वह प्रेम-भाव में बदल जायगी।"

क्षुद्र और सङ्कीर्ण आकांक्षाओं के वशीभूत होकर मनुष्य ने अपना बहुत आत्मिक पतन कर लिया है और मानव को एक महाभयङ्कर सङ्कट के सामने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहुँचा दिया है। अब उसे अपने सच्चे रूप को समझकर मानवोचित आदर्श ग्रहण करना चाहिए। इस दृष्टि से ठाकुर दयानन्द का 'विश्व-प्रेम' का सिद्धान्त सब प्रकार से कल्याणकारी है। इस सृष्टि के सञ्चालक ने मनुष्य को घृणा करने के लिये नहीं वरन् प्रेम करने के लिए संसार में भेजा है और उसी के लिये हमको सदैव प्राणपण से सचेष्ट होना चाहिए। वर्तमान समय में मनुष्य की स्वार्थयुक्त मनोवृत्ति को देखकर यह विचार बना लेना कि वह इसी प्रकार पाशविक बनी रहेगी 'आत्म-हीनता की ग्रंथि' का चिह्न है। 'अरुणाचल मिशन' के वर्तमान अध्यक्ष श्री अलोकानन्द महाभारती ने ठीक ही कहा है—

"आप प्रश्न करते हैं यह परिवर्तन कब होगा? मैं कहता हूँ कि इसकी अवधि पूर्ण हो चुकी है। आप धैर्य धारण करके और थोड़े दिन प्रतीक्षा कीजिए। एटम-बम और हाइड्रोजन-बम का परिचय संसार को मिल चुका है। तो क्या भगवत्-शक्ति का परिचय जगत् को नहीं मिलेगा? अवश्य मिलेगा।"

यह कम महत्त्व की बात नहीं है कि लगभग साठ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी ठाकुर दयानन्द द्वारा प्रवाहित 'विश्व-प्रेम' की विचारधारा शुष्क नहीं होगई है, वरन् उनके शिष्य—स्वा० हंसानन्द जी, सम्पदानन्द जी, श्री ठाकुरदास राय आदि विभिन्न स्थानों में 'अरुणाचल मिशन' की शाखायें स्थापित करके निरन्तर उस कार्यक्रम को जीवित रखे हुए हैं। सार्वजनिक आन्दोलन में प्रत्यक्ष भाग न लेते हुए भी वे आध्यात्मिक भावनाओं से पूर्ण कीर्तन द्वारा जनसमुदाय को उसकी प्रेरणा देते रहते हैं। इस प्रकार आन्तरिक प्रेरणा से बहुसंख्यक व्यक्ति तथा संस्थायें प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती रहती हैं और वे अपने-अपने ढङ्ग से विश्व-प्रेम के लक्ष्य को समीप लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। मालूम होता है उनकी प्रार्थनायें उस "विश्व-सञ्चालक" के समीप पहुँच चुकी हैं और अब उनकी इच्छा से 'विश्व-परिवर्तन' का दृश्य-पट हमारे सामने आने ही वाला है।

———

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा, जनजागरण प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

સી. જે. પટેલ ઓ. ૪૭૮
પટેલ ઓટો એડવાઇઝર
મહાત્મા ગાંધીજી રોડ,
કડીયા લાઇન, મું. ગોંડલ.

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org